संगीत भूषण (प्रथम खंड)
Sangeet Bhushan, Part-I (First Year)
तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का ज्ञान-
लय और उसके तीन प्रकार (विलम्बित, मध्य द्रुत) मात्रा, ताल विभाग सम ताली खाली, आवर्तन, ठेका, ठाह और दुगुन)

(२) तबले की उत्पति का साधारण ज्ञान तथा दाहिने और बायें अंगों का वर्णन।

(३) तबला और पखावज के दाहिने और बायें कौन कौन से स्थान पर आघात करके कौन कौन से शब्द उत्पन्न होते है, उनका विवरण।

(४) इस वर्ष में निर्धारित ताल समूहों के ठेकों को ठाह और दुगुन लय में लिखनें का अभ्यास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) एक से सोलह मात्रा तक हाथ पर ताली की सहायता से लय में बोलनें का अभ्यास।

(२) त्रिताल, झपताल, कहरवा, दादरा और चारताल के ठेकों को ठाह और दुगुन लय में बजानें का अभ्यास।

(३) त्रिताल में कायदा, २ मुखडा, ३ टुकडा, ३ तिहाई और झपताल में ३ सरल टुकडा २ कायदा २ मुखडा बजानें का अभ्यास।

(४) गत एवं गीत में सम समझाकर तबला वादन आरम्भ करने का अभ्यास।

(५) पखावज पर सूल, चारताल और तीवरा ताल में परन, टुकडा और ३ तिहाई बजानें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम युक्त रहेगा।

संगीत भूषण (द्वितीय खंड)
Sangeet Bhushan, Part-II (Second Year)
तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) तबला और पखावज के दाहिने और बाये के किस -किस स्थान पर आघात करके कौन-कौन से संयुक्त अक्षर उत्पन्न होते हैं, उनका विवरण।

(२) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का अध्ययन-
बोल, कायदा, पलटा, तिहाई और उनके प्रकार, मोहरा, मुखडा, टुकडा, तिगुन और चौगुन, रेला, पेशकार, उठान एवं परण।

(३) भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर की ताल पद्धति का ज्ञान एवं विष्णु दिगम्बर पद्धति का ठेका लिखने का अभ्यास।

(४) प्रथम और द्वितीय वर्ष में निर्धारित ताल समूहों के ठेकों की ठाह, दुगुन एवं चौगुन लयकारी लिखना।

(५) जीवनी-अनोखेलाल मिश्र, कन्हेमहाराज, विष्णु नारायण भातखंडे।

क्रियात्मक (Practical)

(१) एकताल, सूलफांक, दीपचन्दी,रूपक तीवरा तथा तिलवाड़ा ताल के ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयकारी में बजानें का अभ्यास। हाथ पर ताली खाली दिखाकर उपर्युक्त तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन एवं चौगुन में बोलने का अभ्यास।

(२) त्रिताल में कायदा, पेशकार, टुकडा और मुखडा बजानें का अभ्यास। झपताल और एकताल में ३ कायदा, २पेशकार, २ टुकडा और ३ तिहाई का अभ्यास। दादरा और कहरवा के ठेकों को उलट-पलट करके बजानें का अभ्यास।

(३) पखावज पर सूलफांक, चौताल, तीवरा तथा धमार ताल के ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयकारी में बजाना।

(४) पखावज पर उपर्युक्त तालों में गत, तोड़ा और परन बजाना।

(५) गीत और वाद्य के साथ साधारण ठेका बजानें का ज्ञान।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भूषण पूर्ण
Sangeet Bhushan Final (Third Year)
तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का अध्ययन।
रेला, लग्गी, लडी,आड, गत, बांट, चक्करदार परन, ग्रह और उसके चार प्रकार, पेशकार, तबला के दस वर्ण, दमदार तिहाई तथा वेदमदार तिहाई।

(२) ताल और उसके दस प्राण।

(३) साधारण गायन एवं वादन शैली का ज्ञान-जैसे ध्रुपद, धमार ठुमरी, ख्याल, मसीदखानी और रजाखानी गत।

(४) समान मात्रा, के ताल समूहों का तुलनात्मक अध्ययन।

(५) तबला और पखावज का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन।

(६) तबला और पखावज को स्वर में मिलाने की विधि।

(७) तबला और पखावज वादक के गुण एवं दोष।

(८) भारतखंडे तथा विष्णु दिगम्बर की ताल पद्धतियों का अध्ययन और इन दोनों पद्धतियों में कायदा, टुकडा, परण पेशकार आदि लिखनें का अभ्यास।

(९) पहले से तृतीय वर्ष तक निर्धारित सब तालों के ठेकों की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, और आड़ लयकारी लिखनें का अभ्यास।

(१०) अहमद जान थिरकवा, करामत उल्ला खां तथा हिरेन गांगुली के वादक रूप में प्रसिद्वि का कारण।

(११) संगीत विषयक निबन्ध।

क्रियात्मक (Practical)

(१) आड़ाचारताल, धमार, झूमरा, पंजाबी ठेका, जत ताल, सवारी (१५मात्रा) गजझम्पा, मत और रूद्र ताल के ठेको की ठाह दुगुन तिगुन एवं चौगुन लयकारी बजानें का अभ्यास।

(२) एकताल, चारताल, अड़ाचारताल एवं झूमरा ताल में पेशकार कायदा, टुकड़ा चक्करदार परन बजानें का अभ्यास। धमार तथा तीवरा ताल में पांच टुकडे तथा ३ तिहाई बजानें का अभ्यास।

(३) तबला और पखावज को स्वर में मिलाने का अभ्यास।

(४) कण्ठ संगीत और यन्त्र संगीत के साथ संगत करनें की क्षमता।

(५) दादरा और कहरवा ताल में कठिन लग्गी एवं लड़ी बजानें का अभ्यास।

(६) त्रिताल और झपताल में लहरा बजाना।

(७) धमार, तीवरा और सूलफांक ताल में गत, परन एवं चक्करदार परण बजानें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।